शोध संचयन
A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research
ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net
Vol. 17
Issue 1&2
15, Jan- July, 2026

स्वदेशी ज्ञान पुनर्जागरण से आत्मनिर्भर भारत का मार्ग प्रशस्त और भारतीय ज्ञान की वैश्विक प्रतिष्ठा

बीज शब्द :

पुनर्जागरण, वैश्वीकरण,

भारत का ज्ञान-सरणि इतिहास अत्यंत समृद्ध, विधिसम्मत और वैज्ञानिक है। उच्च शिक्षा में स्वदेशी ज्ञानधारा का पुनर्स्थापन वर्तमान समय की अनिवार्य आवश्यकता बन गया है। वैश्वीकरण, तकनीकी क्रांति और प्रतिस्पर्धी शिक्षा के मध्य भारतीय शिक्षा जगत तेजी से पश्चिमी प्रतिमानों की ओर उन्मुख हुआ, जिसके परिणामस्वरूप स्थानीय ज्ञान, सांस्कृतिक दर्शन, भाषाई संपदा एवं पारंपरिक विज्ञान उपेक्षित हो गए। इस शोध-पत्र का उद्देश्य स्वदेशी ज्ञान परंपरा के पुनर्जागरण की आवश्यकता, स्वरूप एवं उच्च शिक्षा में उसके नवाचारमूलक अनुप्रयोगों का विश्लेषण करना है। शोध-पत्र में भारतीय ज्ञान प्रणाली, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, पारंपरिक विज्ञान, नवाचार, कौशल, उद्यमिता एवं पाठ्यक्रम-सुधार के संदर्भ में विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया गया है। निष्कर्षतः यह स्पष्ट होता है कि स्वदेशी ज्ञान न केवल भारत की सांस्कृतिक पहचान है, बल्कि भविष्य के ज्ञान-आधारित समाज और आत्मनिर्भर भारत निर्माण की आधारशिला भी है।

*****

प्रो० सीताराम सिंह प्राचार्य,
जवाहरलाल नेहरू स्मारक पी.जी. कॉलेज, बाराबंकी
डॉ. संतोष कुमार
सह असिस्टेंट प्रोफेसर,
बी.एड., राणा प्रताप पी.जी. कॉलेज, सुल्तानपुर
डॉ. शिल्पी
विभागाध्यक्ष, शिक्षाशास्त्र,
राणा प्रताप पी.जी. कॉलेज, सुल्तानपुर

स्वदेशी ज्ञान पुनर्जागरण से आत्मनिर्भर भारत का मार्ग प्रशस्त और भारतीय ज्ञान की वैश्विक प्रतिष्ठा

भारत सदियों से ज्ञान, विज्ञान, विचार और दर्शन का पावन केंद्र रहा है। गुरुकुल परंपरा, तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालयों ने न केवल भारत बल्कि सम्पूर्ण विश्व के ज्ञान को दिशा दी। किन्तु उपनिवेशकाल के पश्चात भारतीय शिक्षा व्यवस्था पश्चिमी संरचनाओं में ढल गई। आज आवश्यकता है कि- ''पुरातन ज्ञान का पुनर्पाठ और आधुनिक ज्ञान का समन्वय- यही स्वदेशी ज्ञान नवाचार का सूत्र है।'' राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भारतीय ज्ञान प्रणाली को उच्च शिक्षा में प्रतिष्ठित करने की दिशा में क्रांतिकारी प्रयास किये हैं। इस शोध-पत्र में इन्हे नवप्रवर्तनशील आयामों का विश्लेषण प्रस्तुत है।

शोध-पत्र के उद्देश्य :-

1. स्वदेशी ज्ञान परंपरा की मूल अवधारणाओं का विश्लेषण करना। 2. उच्च शिक्षा में स्वदेशी ज्ञान के नवाचार की आवश्यकता को स्पष्ट करना।

3. भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) के विश्वविद्यालयी ढांचे में एकीकरण की संभावनाओं का अध्ययन करना।

4. पाठ्यक्रम, अनुसंधान, उद्यमिता एवं कौशल विकास में स्वदेशी ज्ञान के अनुप्रयोगों को समझना।

5. नवाचार आधारित स्वदेशी ज्ञान मॉडल का प्रस्ताव रखना। समस्या का विवेचन :- वैश्विक शिक्षा-प्रतिस्पर्धा के कारण भारतीय शिक्षण संस्थान पश्चिमी प्रतिमानों को अपनाने में अधिक व्यस्त हो गए। इसके परिणामस्वरूप- भारतीय भाषाओं का महत्व कम हुआ। प्राचीन विज्ञान और परंपराएँ शोध विषयों से हट गईं। कौशल, उद्यमिता और नवाचार विदेशी सिद्धांतों पर आधारित हो गए। युवा पीढ़ी अपनी सांस्कृतिक पहचान से दूर होने लगी। इस समस्या का समाधान ज्ञान पुनर्जागरण और स्वदेशी ज्ञान नवाचार में निहित है।

शोध–पद्धति :- यह शोध-पत्र वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पर आधारित है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 UGCds IndianKnowledge System (IKS) दस्तावेज विभिन्न शोध लेख, पुस्तकें, रिपोर्ट परंपरागत ज्ञान के क्षेत्रीय अध्ययनों का संदर्भ लेकर सामग्री संग्रहित एवं विश्लेषित किया गया है।

स्वदेशी ज्ञान परंपरा का दार्शनिक स्वरूप :-

स्वदेशी ज्ञान का आधार- प्रकृति के साथ सामंजस्य, स्थानीय परिस्थितियों पर आधारित समाधान, अनुभवजन्य विज्ञान, सततता, नैतिकता और सामूहिकता है। भारतीय दार्शनिक परंपरा में ज्ञान का लक्ष्य केवल सूचना प्राप्ति नहीं बल्कि मानव निर्माण है। ''सा विद्या या विमुक्तये''- ज्ञान वही है जो मुक्त करे। उच्च शिक्षा में स्वदेशी ज्ञान की प्रासंगिकता (क) भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) के आयाम आयुर्वेद योग और ध्यान वास्तु एवं स्थापत्य लोककला और हस्तशिल्प, यूनानी, तिब्बती, चिकित्सा, वैदिक गणित एवं भारतीय गणित परंपरा भारतीय भाषाशास्त्र, व्याकरण एवं साहित्य, पर्यावरण-अनुकूल कृषि तकनीकें ये सभी विषय आधुनिक उच्च शिक्षा में नए शोध-विषयों, नए पाठ्यक्रमों और स्टार्टअप मॉडल के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। (ख) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भूमिका

NEP 2020 ने पहली बार यह स्पष्ट किया कि- भारतीय भाषाओं में शिक्षा IKS केंद्रों की स्थापना स्थानीय ज्ञान पर आधारित शोध शिक्षा का अभिन्न अंग होना चाहिए।

स्वदेशी ज्ञान में नवाचार की संभावनाएँ-

1. आयुर्वेद व योग + आधुनिक चिकित्सा अनुसंधान औषधीय पौधों पर जैव-प्रौद्योगिकी आधारित शोध मानसिक स्वास्थ्य में योग-चिकित्सा

2. वैदिक गणित + आधुनिक कंप्यूटर तेज गणना तकनीकें AI और डेटा एनालिटिक्स में अनुप्रयोग

3. पारंपरिक कृषि तकनीक + जलवायु विज्ञान प्राकृतिक खेती जैविक कीटनाशक

4. लोक कला + डिज़ाइन इनोवेशन ग्लोबल मार्केट, ई-कॉमर्स उद्यमिता के नए अवसर

5. स्वदेशी खेल + स्पोर्ट्स साइंस योग, मलखंभ, कबड्डी शरीर-रचना विज्ञान पर

शोध विश्वविद्यालयों में स्वदेशी ज्ञान का एकीकरण-

1. IKS आधारित पाठ्यक्रमों का विकास Certificate, Diploma, UG, PG पाठ्यक्रम

2. अनुसंधान केंद्र एवं इनोवेशन लैब

3. डिजिटल आर्काइव- शास्त्र, ग्रंथ, लोककला

4. उद्यमिता- Startups in AYUSH, organic farming, handicraft 5. पाठ्यपुस्तक निर्माण- भारतीय भाषाओं में उच्च शिक्षा में स्वदेशी ज्ञान के **लाभ**– सांस्कृतिक आत्मविश्वास, रोजगार एवं उद्यमिता के नए अवसर, वैश्विक स्तर पर भारतीय ज्ञान की पहचान, अंत:विषयक शोध की वृद्धि, सतत विकास

और पर्यावरण-संतुलन।

चुनौतियाँ :- संसाधन एवं प्रशिक्षित अध्यापकों की कमी, पारंपरिक ज्ञान को वैज्ञानिक रूप में रूपांतरित करने की कठिनाई, पाठ्यक्रमों का अत्यधिक पश्चिमीकृत स्वरूप, भाषा अवरोध उद्योग-धंधों से सीमित सहयोग।

सुझाव :-

1. केंद्र एवं राज्य विश्वविद्यालयों में IKS विभाग अनिवार्य किए जाएँ।
2. शिक्षक प्रशिक्षण में स्वदेशी ज्ञान आधारित FDP आयोजित हों।
3. स्थानीय समस्याओं पर आधारित Community-based Research को बढ़ावा दिया जाए।
4. IKS आधारित स्टार्टअप हेतु वित्तीय सहायता उपलब्ध कराया जाए।
5. विद्यालय से विश्वविद्यालय तक भारतीय भाषाओं को बढ़ावा दिया जाए।
6. पारंपरिक ज्ञान को डिजिटल माध्यम से संग्रहित कर National Indigenous Knowledge Repository बनाया जाए।

निष्कर्ष :-

स्वदेशी ज्ञान का पुनर्जागरण भारत के शैक्षिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक तथा आर्थिक भविष्य की अनिवार्य आवश्यकता है। उच्च शिक्षा में स्वदेशी ज्ञान के नवाचार से न केवल शिक्षा अधिक प्रासंगिक, व्यावहारिक और बाज़ारोन्मुख होगी, बल्कि भारतीय युवा अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़कर वैश्विक मंच पर आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ सकेंगे। यह शोध स्पष्ट करता है कि-स्वदेशी ज्ञान परंपरा केवल अतीत की विरासत नहीं, बल्कि भविष्य के ज्ञान-समाज की आधारशिला है। इसके नवाचार से आत्मनिर्भर भारत का मार्ग प्रशस्त होगा, स्थानीय से वैश्विक तक भारतीय ज्ञान की प्रतिष्ठा होगी और शिक्षा के क्षेत्र में एक नए ज्ञान पुनर्जागरण की शुरुआत होगी।

संदर्भ-ग्रंथ सूची

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारत सरकार।
2. AICTE-IndianKnowledgeSystem(IKS) DivisionReports
3. शर्मा, रामवल्लभ- भारतीय शिक्षा और सांस्कृतिक पुनर्जागरण, राजपाल एंड संस।
4. दयानंद भार्गव- भारतीय दर्शन की रूपरेखा, मोतीलाल बनारसीदास।
5-Chatterjee, S.C.&Datta, D.M.-An Introduction to Indian Philosophy
6-Debroy, Bibek- The Tradition of IndianIntellectual Thought
7-UNESCO Reports on Indigenous Knowledge Systems (2019 & 2024)
8. रमेश चंद्र दीक्षित- स्वदेशी ज्ञान परंपरा और आधुनिक भारत।
9-Acharya, Shrikant- Vedic Science and Innovation.

◆◆◆